।। श्री गणेशाय नमः ।।
श्रीमद् अनन्य रसिक सखी सम्प्रदाय प्रवर्त्तकार्चा सारस्वत कुल–कमल
दिवाकर आशुधीरात्मज श्री निधिवनाधीश गायनैक शिरोमणि
अनन्य श्रीविभूषित स्वामी श्रीहरिदास चरण युगल
समर्पित
।। श्रीमत्कुन्जबिहारी ।।

व्रतोत्सव-निर्णय श्रीमत्कुंजबिहारी

स्वामी श्रीहरिदास नाम रसिकाः सारस्वतानां वराः।
वीणा–वादन–गायनैक चतुराः सद्भक्तलब्धादराः।।
तत्सम्पूजित–पादपद्मयुगलं श्रीमद्बिहारिप्रभोः।
वार्षिक्योत्सव निर्णयो विजयते नेत्राश्व व्योऽम द्वयोः।।

श्रीहरिदास 545 | वि. संवत् 2081, | ईसवी 2024–25

चैत्र शुक्ल पक्ष

तिथि	वार	तारीख	उत्सव विवरण
01	मंगलवार	09 अप्रैल 2024	वर्षारम्भ। (कालयुक्त संवत्सर) श्रीबिहारीजी महाराज के सामने पंचांग श्रवण। श्री आशुधीरोत्सव। श्री वासान्तिक नवरात्रारम्भः।
05	शनिवार	13 अप्रैल	मेष संक्रान्ति।
09	बुधवार	17 अप्रैल	श्री रामनवमी व्रतम्।
11	शुक्रवार	19 अप्रैल	कामदा एकादशी। आज से श्रीबिहारीजी महाराज के फूल बंगला प्रारम्भ। प्रतिदिन श्रावण की हरियाली अमावस्या तक फूल बंगला बनते हैं। पूर्णिामा व्रतम्। व्रत पूर्व दिने।
13	रविवार	21 अप्रैल	
15	मंगलवार	23 अप्रैल	

वैशाख कृष्ण पक्ष

11	शनिवार	04 मई	वरूथिनी एकादशी व्रतम्।
12	रविवार	05 मई	प्रदोष व्रतम्।
30	बुधवार	08 मई	स्नान दानादौ अमावस्या।

वैशाख शुक्ल पक्ष

02	शुक्रवार	10 मई	अक्षय तृतीयोत्सव। चन्दन यात्रा। आज के दिन श्रीबिहारीजी महाराज के चरणदर्शन, चन्दन लेपन व सांय सर्वांग दर्शन होते है
07	मंगलवार	14 मई	वृष संक्रान्ति।
11	रविवार	19 मई	मोहिनी एकादशी व्रतम्।
12	सोमवार	20 मई	सोम प्रदोष व्रतम्।
14	बुधवार	22 मई	श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रतम्।
15	गुरूवार	23 मई	वैशाखी पूर्णिमा व्रतम्।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

11	रविवार	02 जून	अचला एकादशी व्रतम्।
13	मंगलवार	04 जून	भौम प्रदोष व्रतम्।
30	गुरूवार	06 जून	वट् सावित्री अमावस्या।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

09	शनिवार	15 जून	मिथून संक्राति।
10	रविवार	16 जून	गंगा दशहरा।
12	मंगलवार	18 जून	निर्जला एकादशी व्रतम्।
12	बुधवार	19 जून	प्रदोष व्रतम्।
15	शनिवार	22 जून	पूर्णिमा। व्रत पूर्व दिने।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

11	मंगलवार	02 जुलाई	योगिनी एकादशी व्रतम्।
12	बुधवार	03 जुलाई	प्रदोष व्रतम्
30	शुक्रवार	05 जुलाई	अमावस्या।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

02	रविवार	07 जुलाई	रथ यात्रा
10	मंगलवार	16 जुलाई	कर्क संक्रान्ति।
11	बुधवार	17 जुलाई	देव शयनी एकादशी व्रतम्।
12	गुरूवार	18 जुलाई	प्रदोष व्रतम्।
15	रविवार	21 जुलाई	गुरू पूर्णिमा। गोस्वामीश्रीजगन्नाथाचार्य उत्सव,

व्यास पूजन। आज के दिन श्रीनिधिवन राज में फूल बंगला बनता है।

श्रावण कृष्ण पक्ष

11	बुधवार	31 जुलाई	कामदा एकादशी व्रतम्।
12	गुरूवार	01 अगस्त	प्रदोष व्रतम्।
30	रविवार	04 अगस्त	हरियाली अमावस्या। फूल बंगला समाप्त।

श्रावण शुक्ल पक्ष

03	बुधवार	07 अगस्त	हरियाली तीज। आज के दिन श्रीबिहारीजी महाराज स्वर्ण हिंडोले में विराजते हैं।
12	शुक्रवार	16 अगस्त	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
13	शनिवार	17 अगस्त	प्रदोष व्रतम्। सिंह संक्रान्ति।
15	सोमवार	19 अगस्त	पूर्णिमा। रक्षाबन्धन। व्रतम् पूर्व दिने।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

07	सोमवार	26 अगस्त	अनन्त श्री विष्णु स्वामी जयन्ती गोस्वामी रूपानन्दजी महाराज का उत्सव। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतम्। आज रात्रि
08	मंगलवार	27 अगस्त	को शयन आरती के पश्चात् श्रीबिहारीजी महाराज के चबूतरे पर श्रीमद्भागवतान्तर्गत श्रीकृष्ण जन्म की कथा। रात्रि 12 बजे महाभिषेक। लगभग रात्रि 3:00 बजे मंगला आरती होकर दर्शन खुले रहते हैं। आज के ही दिन श्रीबिहारीजी महाराज की मंगला आरती होती है।
10	बुधवार	28 अगस्त	नन्दोत्सव। श्रृंगार आरती के पश्चात् दधिकांदौ।
12	शुक्रवार	30 अगस्त	जया एकादशी व्रतम्।
13	शनिवार	31 अगस्त	शनि प्रदोष व्रतम्।
30	सोमवार	02 सितम्बर	सोमवती कुशोत्पाटनी अमावस्या।
30	मंगलवार	03 सितम्बर	अमावस्या।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

02	गुरूवार	05 सितम्बर	आज से श्रीस्वामी जी महाराज का बधाई उत्सव प्रारम्भ। साम श्रावणी।
04	शनिवार	07 सितम्बर	श्री गणेश जन्मोत्सव।
05	रविवार	08 सितम्बर	ऋषि पंचमी व्रतम्।
06	सोमवार	09 सितम्बर	बल्देव छठ। ललिता जयन्ती।
08	बुधवार	11 सितम्बर	श्री राधाअष्टमी व्रतम्। श्री राधा जयन्ती। आज एक ही दिन राजभोग आरती के पश्चात् बिहारीजी महाराज के मन्दिर में सांय 4 बजे रासलीला होती है सांय काल मन्दिर से चाव की दिव्य सवारी श्री निधिवनराज पधारती है। गोस्वामी समाज गायन करते हुए निधिवनराज पधारते है एवं संगीत सम्मेलन के विशेष आयोजन होते है।
11	शनिवार	14 सितम्बर	पद्मा एकादशी व्रतम्।
12	रविवार	15 सितम्बर	श्री वामन द्वादशी व्रतम्। प्रदोष व्रतम्।
14	मंगलवार	17 सितम्बर	अनन्त चतुर्दशी व्रतम्। कन्या संक्रान्ति। पूर्णिमा श्राद्ध।
15	बुधवार	18 सितम्बर	पूर्णिमा। व्रतम्। पूर्व दिने। महालयारम्भः।

आश्विन कृष्ण पक्ष

11	शनिवार	28 सितम्बर	इन्दिरा एकादशी व्रतम्।
12	रविवार	29 सितम्बर	प्रदोष व्रतम्।
30	बुधवार	02 अक्टूबर	अमावस्या। पितृ विसर्जन।

आश्विन शुक्ल पक्ष

01	गुरूवार	03 अक्टूबर	शारदीय नवरात्र प्रारम्भ।
10	शनिवार	12 अक्टूबर	विजया दशमी।
11	रविवार	13 अक्टूबर	पापाकुंशा एकादशी व्रतम्।
13	मंगलवार	15 अक्टूबर	भौम प्रदोष व्रतम्।

14	बुधवार	16 अक्टूबर	शरद पूर्णिमा व्रतम्। आज के दिन श्रीबिहारीजी महाराज मोरमुकट-कटि काछनी एवं वंशी धारण करते हैं।
15/1	गुरूवार	17 अक्टूबर	पूर्णिमा, कार्तिक स्नान एवं दीपदान प्रारम्भ। तुला संक्रान्ति।

कार्तिक कृष्ण पक्ष

03	रविवार	20 अक्टूबर	करवा चौथ व्रतम्। चन्द्रोदय रात्रि 7:40
08	गुरूवार	24 अक्टूबर	अहोई अष्टमी व्रतम्।
11	सोमवार	28 अक्टूबर	रम्भा एकादशी व्रतम्।
12	मंगलवार	29 अक्टूबर	भौम प्रदोष व्रतम्। धनतेरस।
13	बुधवार	30 अक्टूबर	रूप चतुर्दशी। छोटी दीपावली। हनुमान जयन्ती।
14	गुरूवार	31 अक्टूबर	दीपावली। महालक्ष्मी पूजन। प्रदोष काल में हनुमान जयन्ती।
30/1	शुक्रवार	01 नवम्बर	अमावस्या, गोवर्धन पूजन। अन्नकूट।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

02	रविवार	03 नवम्बर	भाई दौज। यम द्वितीया स्नान। आज से दर्शन समय परिवर्तन।
08	शनिवार	09 नवम्बर	गोपाष्टी व्रतम्।
09	रविवार	10 नवम्बर	अक्षय नवमी। वृन्दावन-मथुरा की युगल परिक्रमा।
11	मंगलवार	12 नवम्बर	देव प्रबोधिनी एकादशी व्रतम्।
12	बुधवार	13 नवम्बर	प्रदोष व्रतम्।
15	शुक्रवार	15 नवम्बर	कार्तिक प्रर्णिमा। व्रतम्। पूर्व दिने।

आश्विन कृष्ण पक्ष

01	शनिवार	16 नवम्बर	वृश्चिक संक्रान्ति।
11	मंगलवार	26 नवम्बर	उत्पन्ना एकादशी व्रतम्।
13	गुरूवार	28 नवम्बर	प्रदोष व्रतम्।
30	रविवार	01 दिसम्बर	अमावस्या।

मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष

05	शुक्रवार	06 दिसम्बर	बिहार पंचमी। श्रीबिहारी जी महाराज का प्रादुर्भाव श्री विट्ठल विपुलोत्सव। मध्याह्न में स्वामी श्री हरिदासजी महाराज की सवारी श्रीनिधिवनराज से मन्दिर पधारती है।
11	बुधवार	11 दिसम्बर	मोक्षदा एकादशी व्रतम्। गीता जयन्ती।
13	शुक्रवार	13 दिसम्बर	प्रदोष व्रतम्।
15	रविवार	15 दिसम्बर	पूर्णिमा। व्रतम् पूर्व दिने।

पौष कृष्ण पक्ष

01	सोमवार	16 दिसम्बर	धनु संक्रान्ति।
11	गुरूवार	26 दिसम्बर	सफला एकादशी व्रतम्।
13	शनिवार	28 दिसम्बर	शनि प्रदोष व्रतम्।
30	सोमवार	28 दिसम्बर	सोमवती अमावस्या।

पौष शुक्ल पक्ष

11	शुक्रवार	10 जनवरी 2025	पुत्रदा एकादशी व्रतम्।
12	शनिवार	11 जनवरी	शनि प्रदोष व्रतम्।
15	सोमवार	13 जनवरी	पूर्णिमा व्रतम्।

माघ कृष्ण पक्ष

01	मंगलवार	14 जनवरी	मकर संक्रान्ति।
04	शुक्रवार	17 जनवरी	सकट चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय
11	शनिवार	25 जनवरी	षट्तिला एकादशी व्रतम्।
13	सोमवार	27 जनवरी	सोम प्रदोष व्रतम्।
30	बुधवार	29 जनवरी	मौनी अमावस्या।

माघ शुक्ल पक्ष

05	सोमवार	03 फरवरी	बसन्त पंचमी।
11	शनिवार	08 फरवरी	जया एकादशी व्रतम्।
13	सोमवार	10 फरवरी	सोम प्रदोष व्रतम्।
15	बुधवार	12 फरवरी	पूर्णिमा व्रतम्। कुम्भ संक्रान्ति।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

11	सोमवार	24 फरवरी	विजया एकादशी व्रतम्।
12	मंगलवार	25 फरवरी	भौम प्रदोष व्रतम्।
14	गुरूवार	27 फरवरी	शिव चतुर्दशी व्रतम्।
30	शुक्रवार	28 सितम्बर	अमावस्या।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

11	सोमवार	10 मार्च	आवला एकादशी व्रतम्। आज से श्री बिहारीजी महाराज के मंदिर मे रंगीली होली प्रारंभ।
12	मंगलवार	11 मार्च	भौम प्रदोष व्रतम्।
14	गुरूवार	13 मार्च	होली का दहन रात्रि 10:34 पूर्णिमा व्रतम्।
15	शुक्रवार	14 मार्च	धुलैडी। डोलोत्सव। मीन संक्रान्ति।

चैत्र कृष्ण पक्ष

02	रविवार	16 मार्च	आज से दर्शन समय परिवर्तन।
11	मंगलवार	25 मार्च	पाप मोचनी एकादशी व्रतम्।
13	गुरूवार	27 मार्च	प्रदोष व्रतम्।
30	शनिवार	29 मार्च	अमावस्या। वर्ष समापन।

नित्य आरतियों एवं दर्शन का समय

	होली की दौज से	दीपावली की दौज से
दर्शन का समय	प्रात: 7:45 से 12:00 बजे तक	प्रात: 8:45 से 1:00 बजे
श्रृंगार आरती	प्रात: 7:55 बजे	प्रात: 8:55
राजभोग आरती	दोपहर 11:55 बजे	दोपहर 12:55 बजे
दर्शन का समय	सांय 5:30 से 9:30 बजे	सांय 4:30 से 8:30
शयन भोग आरती	रात्रि 9:25	रात्रि 8:25

श्रीकुन्जबिहारी–अष्टक

यस्तूयते श्रुतिगणैर्निपुणैरजस्त्रं, सम्पूजयतेक्रतुगतैः प्रणतैः क्रियाभिः।
तं सर्वकर्मफलदं निजसेवकानां, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

यं मानसे सुमतयो यतयो निधाय, सद्यो जहुः सहृदया हृदयान्धकारम्।
तं चन्द्रमण्डलनखावलिदीप्यमानं, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

येन क्षणेन समकारि विपद्वियोगो, ध्यानास्पदं सुगमितेन नुतेविज्ञै।
तं तापवारण निवारण सांकुशांकं, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

यस्मै विधाय विधिना विधिनारदाद्याः, पूजां विवेकवरदा वरदास्यभावा'ः।
तं दाक्षलक्षण–विलक्षण–लक्षणाढयं, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

यस्मात् सुखैकसदनान्मदनारिमुख्याः, सिद्धिं समीयुरतुलां–सकलांगशोभाम्।
तं शुद्धबुद्धि–शुभवृद्धि–समृद्धि–हेतुं, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

यस्य प्रपन्नवरदस्य प्रसादतःस्यात्, तापत्रयापहणं शरणं गतानाम्।
तं नीलनीरजनिभं जनिभञजनाय, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

यस्मिन्मनो विनिहितं भवति प्रसन्नं, खिन्निं कतिन्द्रियगणैरपि यद्विषण्यम्।
तं वास्तवस्यवनिरस्तसमस्तदुःखं, श्रीमद्विहारीचरणं शरणं प्रपद्ये।।

हे कृष्ण पादशमितातिविशादभत्त–वाञछाप्रदामरमहीरूहपञचशाख।
संसार सागर समुत्तरणे वहित्रः, हे चिन्ह चित्रित चरित्र नमो नमस्ते।।

इदं विष्णोः पादाष्टकमतिविषादाभिशमनं,
प्रणीतं यत्प्रेम्णा सुकविजगदीशेन विदुषाः।
पठेदु यो वा भक्त्याच्युतचरणचेताः समनुजो,
भवे भुक्त्वा भोगान भिसरति चान्ते हरि पदम्।।

श्री बाँकेबिहारी–विनय–पचासा

दोहाः बाँकी चितवन कटि लचक, बाँके चरन रसाल ।
स्वामी श्री हरिदास के, बाँकेबिहारी लाल ।।

जै – जै – जै श्रीबाँकेबिहारी । हम आये हैं शरन तिहारी ।। 1 ।।
स्वामी श्रीहरिदास के प्यारे। भक्तजन के नित रखवारे ।। 2 ।।
श्याम स्वरूप मधुर मुसिकाते। बडे–बडे नैंन नेह बरसाते ।। 3 ।।
पटका पाग पीताम्बर शोभा । सिर सिरपेच देख मन लोभा ।। 4 ।।
तिरछी पाग मोति लर बाँकी । सीस टिपारे सुन्दर झाँकी ।। 5 ।।
मोर पंख की लटक निराली । कानन कुण्डल लट घुँघराली ।। 6 ।।
नथ बुलाक पै तन मन वारी । मंद हसन लागै अति प्यारी ।। 7 ।।
तिरछी ग्रीव कण्ठ मनि माला । उर पै गुंजा हार रसाला ।। 8 ।।
काँधे साजे सुन्दर पटका । गोटा किरन मोतिन के लटका ।। 9 ।।
भुज में पहिर अँगरखा झीनौ । कटि काछनी अंग ढक लीनौ ।। 10 ।।
कमर–बंध की लटकन न्यारी । चरन छुपाये श्रीबाँकेबिहारी ।। 11 ।।
इकलाई पीछे ते आई । दूनी शोभा दई बढाई ।। 12 ।।
गादी सेवा पास विराजै । श्री हरिदास छबी अति राजै ।। 13 ।।
घंटी बाजे बजत न आगै । झाँकी परदा पुनि–पुनि लागै ।। 14 ।।
,सोने – चाँदी के सिंहासन । छत्र लगी मोती की लटकन ।। 15 ।।
बाँके तिरछे सुघर पुजारी । तिनकी हू छबि लागे प्यारी ।। 16 ।।
अतर फुलेल लगाय सिहावैं । गुलाब जल केशर बरसावैं ।। 17 ।।
दूध–भात नित भोग लगावैं । छप्पन–भोग भोग में आवैं ।। 18 ।।
मगसिर सुदी पंचमी आई । सो विहार पंचमी कहाई ।। 19 ।।
आई विहार पंचमी जबते । आनन्द उत्सव होवैं तबते ।। 20 ।।
बसन्त पाँचे साज बसन्ती । लगै गुलाल पोशाक बसन्ती ।। 21 ।।
होली उत्सव रंग बरसावै । उडत गुलाल कुमकुमा लावै ।। 22 ।।
फूल डोल बैठें पिय प्यारी । कुंज विहारिन कुंज विहारी ।। 23 ।।
जुगल सरूप एक मूरत में । लखौ बिहारी जी सूरत में ।। 24 ।।
श्याम सरूप है बाँकेबिहारी । अंग चमक श्री राधा प्यारी ।। 25 ।।

डोल–एकादशी डोल सजावैं । फूले फूल छबी चमकावैं ।। 26 ।।
अखैतीज पै चरन दिखावैं । दूर–दूर के प्रेमी आवैं ।। 27 ।।
गर्मिन भर फूलन के बँगला । पटका हार फूलन के झँगला ।। 28 ।।
शीतल भोग फुहारे चलते । गोटा के पंखा नित झलते ।। 29 ।।
हरियाली तीजन कौ झूला । बडी भीड प्रेमी मन फूला ।। 30 ।।
जन्माष्टमी मंगला आरति । सखी मुदित निज तन–मन वारती ।। 31 ।।
नन्द महोत्सव भीड अटूट । सवा प्रहर कंचन की लूट ।। 32 ।।
,ललिता छठ उत्सव सुखकारी । राधा अष्टमी की चाव सवारी ।। 33 ।।
शरद चाँदनी मुकट धरावैं । मुरलीधर के दर्शन पावैं ।। 34 ।।
दीप दिवारी हटरी दर्शन । निरखत सुख पावै प्रेमी मन ।। 35 ।।
मन्दिर होते उत्सव नित–नित । जीवन सफल करें प्रेमी चित ।। 36 ।।
जो कोई तुम्हें प्रेम ते ध्यावें । सोई सुख मनवांछित फल पावें ।। 37 ।।
तुम हो दीनबन्धु, ब्रज–नायक । मैं हूँ दीन सुनो सुखदायक ।। 38 ।।
मैं आयौ तेरे द्वार भिखारी । कृपा करो श्रीबाँकेबिहारी ।। 39 ।।
दीन दुःखी के संकट हरते । भक्तन पै अनुकम्पा करते ।। 40 ।।
मैं हूँ सेवक नाथ तुम्हारो । बालक के अपराध बिसारो ।। 41 ।।
मोकूँ जग संकट ने घेरौ । तुम बिन कौन हरै दुख मेरौ ।। 42 ।।
विपदा ते प्रभु आप बचाऔ । कृपा करो माकूँ अपनाऔ ।। 43 ।।
मैं अज्ञान मंद–मति भारी । दया करो श्रीबाँकेबिहारी ।। 44 ।।
बाँकेबिहारी विनय पचासा । नित्य पढै पावै निज आसा ।। 45 ।।
पढै भाव ते नितप्रति गावैं । दुख दारिद्र निकट नहीं आवैं ।। 46 ।।
धन परिवार बढै व्यापारा । सहज होय भव सागर पारा ।। 47 ।।
कलियुग के ठाकुर रंग राते । दूर दूर के प्रेमी आते ।। 48 ।।
दर्शन कर निज हृदय सिहाते । अष्ट–सिद्धि नवनिधि सुख पाते ।। 49 ।।
मेरे सब दुख हरो दयाला । दूर करो माया जंजाला ।। 50 ।।
दया करो मोंकूँ अपनाऔ । कृपा–विन्दु मन में बरसाऔ ।। 51 ।।

दोहा : ऐसौ मन की देउ मैं, निरखूँ श्यामा–श्याम ।
प्रेम विन्दु दृग ते झरें, वृन्दावन विश्राम ।।

।। श्रीबाँकेबिहारी लाल की जय ।।

।। श्रीमत्कुन्जबिहारिणे नम : ।।

श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज के प्राकटयकर्ता

श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज

''ऐसो रसिक भयो नहिं ह्वै है भूमण्डल आकाश''

अनन्य रसिक चक्र चूडामणि सारस्वत कुल मार्तण्ड श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज प्रभु की प्रधान सखी श्रीललिता जू के अवतार थे। विधर्मियों का साम्राज्य था लोग अनेक धर्म एवं कर्मकाण्ड के भँवर में फँसे हुए थे। ऐसे समय में श्रीस्वामीजी ने दिव्यातिदिव्य नित्य विहार रसोपासना का प्रकाश किया। प्राणी मात्र के विदग्ध हृदय को शान्ति एवं शीतलता प्रदान की।

सद्गृहस्थ एवं साधारण जन के जीवन के नियम प्रदान किये–

'' ज्यों ही ज्यों ही तुम राखत हो, त्यों ही त्यों ही रहियत हों हो हरि''

हरि भज हरि भज छाँडि मान नर तन कौ। मत वंछै मति वंछै, रे तिल तिल धन कौ।।

अष्टादश–सिद्धान्त के पदों में उपरोक्त एवं अन्य नियम वर्णित है।

जिस पथ को प्राप्त करने के लिए बडे–बडे ज्ञानी तपस्वी नेत्र मूँदकर नासिका पकड हजारों हजार वर्षों तक ध्यान करते हैं, वेद वेदान्त जिस पथ को प्राप्त नहीं कर सके उसी अनन्य रसिकों के बाँके पथ को श्रीहरिदासजी महाराज ने विश्व में प्रकाशित किया जैसाकि स्वयं वल्लभ–पथगामी श्रीगोविन्द स्वामीजी ने उनकी प्रशंसा में लिखा –

''रसिक अनन्यन को पथ बाँकों।
जा पथ कौ पथ लेत महामुनि, मूँदत नैन गहै नित नाकौ।।
जा पथ जौ पछतात हैं वेद, लहै नहिं भेद रहै जकि जाकौ।
सौ पथ श्री हरिदास लह्यौ, रसीरीत की प्रीत चलाय निसाँकौ।।''

उधर तो वृषभाननन्दिनी श्रीकिशोरी जू का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था तो यहाँ हरिदासपुर ग्राम में श्रीआशुधीर जी एवं उनकी पत्नी श्रीमती गंगादेवी जी के यहाँ सं० १५३५ की भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को श्रीस्वामी जी महाराज अवतरित हुए। विवाह २५ वर्ष की अवस्था में हुआ अवश्य किन्तु पत्नी श्रीस्वामी जी का विरक्त भाव देख अपने कंकण से अग्नि प्रज्ज्वलित कर दिव्य प्रकाश रूप हो गईं। परम पूज्य पिता एवं गुरू श्रीआशुधीर जी से दीक्षा ले वृन्दावन आगमन हुआ। परम पवित्र श्यामा कुन्जबिहारी के नित्य लीला स्थल श्रीनिधिवनराज में रस भाव समाधि में लीन रहने लगे।

संगीत शिरोमणि रसिक शेखर ललितावतार अनन्यरसिक श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज की संगीत साधना का परम मंगलमय परिणाम श्रीनिधिवनराजजी में स्वयंप्रकट ठा. श्री बाँकेबिहारी जी महाराज हैं। श्रीबिहारीजी

महाराज का श्रीविग्रह एक–प्राण दो देहि के स्वरूप का साक्षात् दर्शन है जैसे काले घनेबादलों में दामिनी का प्रकाश दैदीप्यमान होता है उसी तरह श्रीराधा श्रीबिहारीजी में समाहित हैं। भक्तों के आग्रह के कारण निकुंजस्थ प्रिया–प्रियतम का साक्षात् श्रीविग्रह प्रगट किया–माई री सहज जोरी प्रगट भई। रंग की गौर श्याम घनदामिनी जैसे।।

यह जोडी आज ही प्रगट नहीं हुई पहले भी थी आज भी है आगे भी रहेगी – **मेरे नित्य किशोर अजन्मा, विहरत एक प्राण द्वै तन्मा।**

आज भी श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज की अद्भुत छवि का दर्शन ऐसा ही है, प्रिया–प्रियतम दोनों मिल एक रूप हैं। वे नन्दनन्दन एवं वृषभानुनन्दिनी श्रीराधारानीजी से भिन्न है। निरन्तर नित्यविहार में लीन रहते हैं। श्रीबिहारीदासजी ने कहा कि धर्म, कर्म, भुक्ति–मुक्ति एवं वेदवेदान्त को मर्यादाओं से आगे अंशकला अवतार एवं उससे भी आगे बृज के रससिन्धु को पार जो कर सके वही श्रीस्वामी हरिदासजी के रस प्रदेश में प्रवेश कर सकता है।

श्रीबिहारीजी महाराज की पूजा पद्धति भी सबसे अलग सबसे भिन्न है। प्रभु यहाँ झाँकियों में दर्शन देते हैं। शृंगार, राजभोग और शयन भोग ये तीन आरतियाँ होती हैं। हाँ साल में एक बार ही जन्माष्टमी के उत्सव पर मंगला आरती एवं अक्षय तृतीया पर चरणों के दर्शन होते हैं। प्रभु की इच्छानुसार ही श्रीस्वामीजी हरिदासजी के कनिष्ठ भ्राता श्री जगन्नाथ जी के वंशज गोस्वामीगण श्रीबिहारीजी महाराज को लाड लडाते हैं उनकी सेवा में निरन्तर लीन रहते हैं। एक बार भी जिसने इस छवि का दर्शन किया वह बस उन्हीं का हो गया।

बाँके की बाँकी झाँकी करि, बाकी रह्यौ कहा है

आज समस्त वैष्णव भक्तजन सम्प्रदायवाद का त्यागकर श्रीबिहारी जी महाराज की बाँकी छवि का दर्शन कर इनके कटीले नयनों में एकबार झाँकता है तो सभी सांसारिक मोहपाश से मुक्त होकर श्रीबिहारीजी महाराज का चरणानुरागी हो जाता है। ठा. श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज का अपने सभी भक्तों पर अनुग्रह भेदरहित है। पूर्व में श्रीबिहारीजी महाराज की सेवा पूजा श्रीनिधिवनराज में ही होती थी, वर्तमान में ठा. श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज के मन्दिर का निर्माण सन् १७६४ में किया गया जिसमें सभी गोस्वामियों ने तन–मन–धन से सहयोग दिया। आज भी ठा. श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज के विभिन्न उत्सवों पर वृन्दावन नगर की हर गली और इस नगर को जोडने वाली सभी सीमाओं से एक ही स्वर– श्रीबाँकेबिहारीलाल की जय ! श्रीबाँकेबिहारीलाल की जय !! का उद्घोष समस्त ब्रजमण्डल में सुनाई देता है और सभी भक्तों का सैलाब अपने लाडिले ठाकुरजी की एक झलक पाने को ललक उठता है और उनकी एक झाँकी पाकर धन्य हो जाता है। जै जै श्रीहरिदास ! जै जै श्रीहरिदास !! जै जै श्रीहरिदास !!!

श्रीबाँकेबिहारीजी की आरती एवं पद

मोर मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यह बानिक मो मन बस्यौ, सदा बिहारीलाल॥
पाग बनी पटुका बन्यौ, बन्यौ लाल की भेष।
जै जै श्रीकुंज बिहारी लाल की, दौरि आरती लेष॥

आरती कीजै श्रीनवनागर की।
खंजन नैन बैन रसमाते, रूप सुधा सागर की।
पान खात मुसिक्यात मनोहर, मुख सुषमा आगर की॥
श्रीरसिक सखी दम्पति आरती सौं नैन सैन उजागर की॥
ऐसे ही देखत रहों जन्म सफल करि मानों।
प्यारे की भामती भामती जू के प्राण प्यारे जुगल किसोरहिं जानों
छिन न टरौं पल होऊँ न इत-उत रहौं एक ही तानों।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी मन रानों॥

श्रीबिहारीजी के दर्शन खुलने का समय

ग्रीष्मकालीन (होली के बाद दौज से)

दर्शन खुलने का समय (प्रात: 7:55 से 11:55, (सांय) 5:30 से 9:30 बजे तक)

आरती : श्रृंगार प्रात: 8:55, राजभोग दोपहर 11:55, शयनभोग रात्रि 9:30 बजे

शरदकालीन (दीपावली के बाद दौज से)

दर्शन खुलने का समय (प्रात: 8:55 से 12:55, (सांय) 4:30 से 8:30 बजे तक)

आरती : श्रृंगार प्रात: 8:55, राजभोग दोपहर 12:55, शयनभोग रात्रि 8:30 बजे

श्रीबाँकेबिहारीजी महाराज की विशेष सेवायें

तुलसी-चन्दन सेवा

पोशाक

छप्पन भोग, भण्डारा

शैया सेवा, दोहरी पूजन

प्रातः काल फूल बैठक

इत्र-गुलाबजल सेवा

दीपक-सेवा

नित्यानी भोग सेवा

फूल बंगला सेवा

प्रसाद वितरण